इन्टरव्यू १६ क

प्रः आपका नाम क्या है ?
जः मेरा नाम बसीर अहमद है।

प्रः आपकी उम्र कितनी है ?
जः मेरी उम्र 32-34 साल है।

प्रः आप भी यहीं काम करते हैं ?
जः हां।

प्रः क्या आपका अपना करघा है ?
जः हां अपना करघा है।

प्रः कितना करघा है ?
जः हमारा एक ही करघा है। मैं अपने हाथ से बिनता हूँ।

प्रः उसी से आपका खर्च चल जाता है ?
जः जी।

इन्टरव्यू १६ ख

रूकावट (कोई अन्य आवाज में)
बड़े व्यापारी ज्यादे हिन्दू है आधे गुजराती हैं।

प्र: लेकिन बुनकारी के काम में ?
ज: बुनकारी में दो मिलेंगे एक मलिन और दूसरा जिसे माही कहते है वों।

प्र: आपका नाम क्या है ?
ज: हमारा नाम लल्लू है।

प्र: आपका ये खानदानी पेशा है की अभी आप शुरू किए हैं ?
ज: नहीं, खानदानी पेशा है।

प्र: कितने साल से ये है ?
ज: 35 साल से।

प्र: आपके पिता भी यही करते थे ?
ज: नहीं हम शुरू किए।

प्र: आपके पिता जी क्या करते थे ?
ज: हमारे पिता तो भैंस गाय का कारोबार करते थे। खेती बाड़ी।

प्र: तो आप कैसे इस पेशे में आ गए ?
ज: हमारे पिता जी कहे कि इसको सीखो तो हम आ कर सीखने लगे सिखते-सिखते जब पास हो गए तो बिनने लगें बिनकर साड़ी पूजाने लगे तो हमें मजदूरी मिलने लगी हमारे बाल बच्चे कि व्यवस्था हो गई।

प्र: और भाई लोग बिनते हैं ?
ज: नहीं, हमारे घर में हमीं बिनते हैं और लोग दूसरा काम करते हैं।

प्र: आपके जैसे बहुत से लोग बुनकारी में लगे हैं ?
ज: हां, बहुत से हिन्दू लोग हैं।

प्र: लगभग कितने प्रतिशत होंगे ?
ज: हमारे गांव के अन्दर 100 ठो होंगे।

प्र: आपका गांव कौन सा है ?
ज: शिरपुरईया बोलते हैं।

प्र: यहां से दूर है ?
ज: हां, बी.एच.यू के पास है।

प्र: इतनी दूर से आते हैं बिनने ?
ज: हां, पेट ऐसा चीज है कि लोग यहां से कलकत्ता बंबई तक जाते हैं। वहां से हम जाड़ें के दिन में सुबह आते है

और शाम को जाते हैं

प्र: आपने जो कहा कि आप 35 सान से बीन रहे हैं तो मजूरी पर कर रहे हैं ?
ज: 35 साल से हम मजदूरी पर ही बिन रहे हैं कि अपना भी करघा है। हां, नहीं अपना करघा नहीं है। जब अपना करना चाहे तो पैसा नही है हम कमा रहे है तो बाल बच्चे खा रहे हैं।

प्र: मजदूरी में 35 सालों में अंतर आया है ?
ज: हां अंतर तो आया है कि लोगों का तनख्वाह बढ़ता है और हम लोगों का घटता है। माने हम कि हम पहले दो हजार कमाते थे अब 15 सौ कमा रहे हैं हमको जो कमाना चाहिए तीन हजार।

प्र: क्यों इसका कारण क्या है ?
ज: कारण यही है कि बड़े व्यापारी माल स्टाक कर रहे हैं और बता रहे हैं कि मंदा है, मंदा है। और माल बाहर नहीं जा रहा है और गरीब लोग को मार रहे हैं और अपना तिजोरी भर रहे हैं। और कुछ और नेता लोग अपना भर रहे हैं।
रूकावट
बताइए तो हम लोगों के पास कैसे आएगा बताए इसका कोई रस्ता
शुरू
बड़ी पार्टी वाले माल दाब रहे है उसके बाद जो पास करा रहें है वो नेता परेता को पैसा देकर फस करा रहे हैं। फंसकर के गरीबों का खून चूस कर अपना खा रहे हैं। अपना बिल्डिंग बनवा रहे हैं और हम गरीब मर रहे हैं।

प्र: साड़ी का दाम घटा है कि बढ़ा ?
ज: बड़ी पार्टी वाले तो अपना बढ़ा रहें हैं लेकिन हम लोगों का घट रहा हैं

प्र: घटा-बढ़ा तो आप लोगों को तो पता नहीं चलता ?
ज: नहीं, घटा देते है लेकिन बढ़ता है तो हम लोगों को नहीं बताते।

प्र: साड़ी का दाम घटता है तो मजूरी घटाते हैं ?
ज: हाँ और जब बढ़ता है तो कोई फर्क नहीं पड़ता। हम लोग क्या जाने, हम लोग तो अनाड़ी है।
रूकावट
हम लोगों को बढ़ता है तो पता नहीं चलता हम लोगों के कान तक खबर ही नहीं देते लोग।
शुरू
जैसे सरकार तेल का दाम 25 रुपये घटा दी तो हम लोगो को नहीं पता होगी लेकिन अगर बढ़ा दे तो हमसे 50 रुपये बढ़ा कर लेंगे। यही सरकार और नेता लोग का चल रहा है।

प्र: बच्चे कितने है ?
ज: पांच बच्चे हैं।

प्र: वो लोग क्या करते हैं ?
ज: वो ये नहीं करतें, दो घर पर रह कर खेती करते हैं और दो ठो बंबई में गन्ना के रस की मशीन चलाते हैं।

प्र: कोई इस काम में नहीं आया ?

ज: नहीं, हम लोग चाहे नहीं इस काम में कोई दम नहीं है इसमें फंसा देंगे तो वो और उनके बच्चे मर जायेंगे। हम तो किसी तरह चला रहे हैं। वो सब अपना काम कर हमारा भी चला रहे हैं। अपना मैं खर्च चला रहा हूं वही कमाल है नहीं 15सौ रुपये में क्या खाना होगा। पांच बच्चे है हम है औरत है मां है। आठ आदमी को 1500 में क्या जियागें बड़े बड़े नेता लोग को घूस देकर माल आ जा रहा है हम लोग का क्या फायदा।